SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

बालक के संवेगात्मक विकास में शिक्षा की भूमिका—एक अध्ययन

श्रीमती नीलम, शोधार्थी, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबडेवाला यूनिवर्सिटी चूडेला, झुंझुनू राजस्थान
ड़ॉ अनीता शर्मा, शोध निर्देशक, श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टीबडेवाला यूनिवर्सिटी चूडेला, झुंझुनू राजस्थान
Email-chauhanneelam2008@gmail.com

सारांश

संवेगों का शिक्षा में बहुत महत्व हैं इसलिए बालकों की विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले परिर्वतनों की समझ शिक्षकों के लिए आवश्यक है।प्रारम्भिक बाल्यावस्था में संवेगों की आवृति और उनकी तीव्रता अधिक होती है इसका कारण मनोवैज्ञानिक होता है।इसी अवस्था में बच्चों और अभिभावको के बीच विरोध की स्थिति पाई जाती है।बाद की अवस्था में पैदा होने वाले संवेगों के लिए इस अवस्था के संवेग आधारभूत होते है।नर्सरी स्कूलों मे प्रवेश के माध्यम से उनका सही प्रकार से मार्गदर्शन किया जा सकता है ।उत्तर बाल्यावस्था में बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण करना सीख लेता है।उसमें अच्छे और बुरे की समझ उत्पन्न हो जाती है।इस अवस्था में विशिष्ट बालको जैसे उपद्रवी,शान्त बालक,समस्यात्मक बालक की पहचान करके ,संवेगों के अनुसार मार्गदर्शन किया जा सकता है।किशोरावस्था में जंहा बालकों में संवेगात्मक परिपक्वता आ जाती है वहीं आर्थिक,सामाजिक,पारिवारिक,वातावरणीय व मनोवैज्ञानिक कारण तनाव के कारण हो सकते है।संवेग लक्ष्यों को निर्धारित करने के साथ साथ कार्य करने के लिए भी प्रेरित करते है।संवेग दो प्रकार के होते है धनात्मक और ऋणात्मक।प्रेम,हर्ष,स्नेह,संतोष आदि धनात्मक संवेग होते है जब्कि तनाव,चिंता, क्रोध आदि नकारात्मक संवेग है। जिनसे बालकों में चिडचिडापन ,एकांत में रहने की प्रवति , आक्रामक मनोवति और समायोजन में कठिनाई आती है।शिक्षा के माध्यम से संवेगों का संसोधन करके उन्हें उचित दिशा प्रदान की जा सकती है,अच्छी आदतों का निर्माण किया जा सकता है। शिक्षक बालकों में उत्पन्न संवेगों को अन्तःक्रिया के माध्यम से पहचानकर निर्देशन प्रदान करते हैं।अतः संवेगों का विकास शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है।

मुख्य शब्द—बालक,संवेगात्मक विकास,शिक्षा,उपयोगिता

प्रस्तावना—

संवेगों का जीवनमें महत्वपूर्ण स्थान है। विभिन्न विद्वानों द्वारा किये गये शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया है कि संवेगात्मक बुद्धि का व्यक्ति को जीवन में प्राप्त सफलता में बहुत बडा योगदान है।प्राचीन समय में मानसिक बुद्धि की माप के आधार पर व्यक्ति को मिलने वाली सफलता का अनुमान लगाया जाता था।लेकिन गोलमैन की बहुचर्चित पुस्तक 'संवेगात्मक बुद्धि बुद्धि लब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों,ने इस विचारधारा को बदल दिया।उनके अनुसार जीवन में प्राप्त सफलता का 80 प्रतिशत योगदान संवेगात्मक बुद्धि का होता है।मानसिक बुद्धि अथवा बुद्धि लब्धि का केवल 20प्रतिशत ही होता है।दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि एक व्यक्ति में उच्च मानसिक बुद्धि है तो यह आवश्यक नही कि वह जीवन मे सफलता प्राप्त करे। सवेगात्मक बुद्वि अपने व दूसरो के भावो की समझ तथा उनका उचित प्रबन्धन करने की योग्यता है । सवेगात्मक बुद्वि भावात्मक स्थिरता है जो कठिन परिस्थितियो मे व्यक्ति की समायोजन में मदद करती है । परिवार, विद्यालय, कार्यस्थल, अथवा समाज प्रत्येक स्थान पर सन्तुलन स्थापित करने के लिए इसकी आवश्यकता पडती है। संवेगों का यदि वांछित दिशा में विकास न हो तो ये विनाश का कारण बन सकते है और दूसरी ओर कौन से संवेग का कौन सी परिस्थिति में और कितनी मा्त्रा में प्रर्दशन होना चाहिए की समझ व्यक्ति को जीवन में समायोजन व सफलता की ओर लेकर जाती है।

संवेग का अर्थ—

'संवेग' शब्द का अंग्रेजी रूपांतरण 'इमोशन' है जो लैटिन शब्द 'इमोवेयर' से बना है जिसका अर्थ है उत्तेजित करना।

पी.टी.यंग के अनुसार—

'संवेग व्यक्ति में त्रीव उपद्रव मचाने वाली स्थिति है जिसका उद्‌गम मनोवैज्ञानिक होता है'।

अत; संवेग जटिल अवस्था है इसमें—

—बहुत तरह के शारीरिक परिवर्तन ,भाव आदि शामिल है।

—संवेग में कई तरह की आंगिक प्रतिक्रियाएं भी होती हैं जैसे रक्तचाप में परिवर्तन ,सांस गति हृदय गति में परिवर्तन आदि।

—संवेग में सिर्फ भीतरी अंगों में ही नहीं अपितु बाहरी अंगों में भी परिवर्तन होता है।

SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed,
Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

–संवेग में सुखद अथवा दुखद भाव की अनुभूति पाई जाती है।

अरस्तु के अनुसार–

'कोई भी व्यक्ति क्रोधित हो सकता है यह सरल है।परन्तु सही मात्रा में सही व्यक्ति पर सही मात्रा में सही समय पर सही उद्देश्य के लिए और उचित तरीके से क्रोधित होना कठिन कार्य हैं।'

अपने जीवन काल में व्यक्ति विकास की विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरता है और इन विभिन्न अवस्थाओं जैसे शैशवास्था,बाल्यावस्था,प्रौढावस्था,में विभिन्न प्रकार के शारीरिक परिवर्तन होते है।विधालयी शिक्षा के दौरान शिक्षक बालकों में होने वाले स्वाभाविक परिवर्तनों को पहचानकर आवश्यकतानुसार निर्देशन प्रदान कर सकता है बशर्ते शिक्षक में स्वयं संवेगों की समझ हो।

जेरशील्ड के अनुसार;

'विधालयी शिक्षा की प्रत्येक क्रियाएं बालकों के संवेगात्मक विकास से संबधित है।यदि विधालय में शैक्षिक कार्यक्रम संवेगात्मक विकास के अनुकूल होगा तो बालक को अपनी सफलताओं में आन्नद अनुभव होगा।इसके फलस्वरूप वे आगामी कार्यक्रम में आन्नदपूर्वक भाग ले सकेंगें।'

व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न तरह संवेग जैसे भय,क्रोध,हर्ष,प्रेम, उत्सुकता आदि का अनुभव करता है।संवेग एक उत्तेजित अवस्था है।इनकी प्रकति भावनात्मक होती है जो व्यक्ति को क्षणिक उत्तेजना प्रदान करते हैं।संवेग में दैहिक तत्व,संज्ञानात्मक तत्व और व्यवहारपरक तत्व शामिल है।व्यक्ति का संवेगात्मक व्यवहार केवल उसके शारीरिक विकास को ही प्रभावित नहीं करता बल्कि बौद्धिक,सामाजिक,नैतिक और सौन्दर्यात्मक विकास पर भी अपना प्रभाव डालता है।

बालकों में भावनात्मक बुद्धि और शिक्षक–

एक शिक्षक की आदतें,तरीके,व्यवहार,दष्टिकोण आदि विधार्थी को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है।शिक्षक विधार्थी के लिए एक रोल मॉडल होता है।विधार्थी शिक्षक का अनुकरण करते है।इसलिए शिक्षा के उद्धेश्यों को पूरा करने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कोई भी सैक्षणिक सस्था स्कूल अथवा कालेज कितने भी भौतिक सुविधाओं तथा आधुनिक तकनीकों से युक्त क्यों न हो किन्तु जब तक योग्य,प्रशिक्षित,अनुभवी,शिक्षक नहीं होंगें तब तक अन्य संसाधन व्यर्थ है।अभिभावकों के पश्चात बालक जिसके साथ सबसे अधिक समय व्यतीत करता है वह शिक्षक ही है।क्योंकि विधालय में शिक्षक की प्रत्येक गतिविधि शिक्षार्थी के व्यवहार को प्रभावित करती है इसलिए शिक्षक के उतरदायित्व और भी अधिक बढ जाते हैं। वह केवल अपने विषय का ज्ञाता ही नही होता ,उसमें अपने विधार्थियो को तथा स्वयं के गुणों तथा कमियो को समझने की योग्यता भी होनी चाहिए। ये गुण भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्तित्व में ही हो सकते हैं।सांवेगिक बुद्धि के धनी व्यक्तित्व वाले शिक्षक कितनी भी बडी समस्या क्यों न हो धैर्य और संयम से काम लेता है।बहुत अधिक प्रसन्नता अथवा क्रोध की स्थिति में उत्तेजित नही होता।भावनात्मक समझ होने के कारण प्रत्येक बालक के प्रति उसकी सोच सकारात्मक होती है।इसके विपरित संवेगात्मक अस्थिरता बालकों पर विपरित प्रभाव डालती है।शिक्षक स्वय के संवेगों की समझ ,उनपर नियंत्रण रखकर तथा प्रबंधन के द्वारा छात्रों के समक्ष अपना आदर्श प्रस्तुत करते है जिससे छात्रों में भावनात्मक समझ पैदा होती है।

2 शिक्षण–अधिगम परिस्थितियों में भावनात्मक बुद्धिमता का विकास

बालक की अपने व दूसरों के संवेगों की समझ,नियंत्रण,प्रबंधन, समस्या समाधान की योग्यता पर स्वस्थ विधालयी वातावरण का सकारात्मक प्रभाव पडता है।कक्षा में विधार्थी सामूहिक रूप से शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेते हैं जिससे उनमें परस्पर सहयोग ,एकता व अनुशासन की भावना का विकास होता है।शिक्षक–शिक्षार्थी तथा शिक्षार्थी –शिक्षार्थी के बीच आपसी अन्तःक्रिया मजबूत बनती है।जीवन की सभी अवस्थाओं में आवश्यक कौशल की आवश्यकता होती है।उच्च भावनात्मक बुद्धिमता वाले छात्र एक –दूसरे के भावों को समझते हैं।ऐसे छात्र अपने मित्रों तथा बडों के प्रति सम्मान का प्रदर्शन करते हैं,उनका व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण होता है ।संघर्ष की स्थिति में विचलित नहीं होते।इसके विपरीत जिनमें भावनात्मक बुद्धिमता की कमी होती है वे क्रोधी,तनावग्रस्त तथा चिडचिडे स्वभाव के होते हैं।ऐसे छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमता के विकास के लिए स्वस्थ शैक्षिक वातावरण उपलब्ध होना चाहिए।अच्छी शिक्षण –अधिगम परिस्थितियों के माध्यम से उनमें सुधार लाया जा सकता है।

3. सह–शैक्षिक गतिविधियां और भावनात्मक बुद्धि– विधालय में शैक्षिक गतिविधियों के साथ –साथ सह–शैक्षिक गतिविधियों जैसे –खेल,योग,कार्यशाला ,सेमिनार, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

जाता है।ये गतिविधियां छात्रों को शारीरिक और मानसिक रूप से तो स्वस्थ रखती ही है साथ ही साथ सहपाठियों को समझने में भी मदद करती है।सांस्कृतिक गतिविधियों में छात्र अपनी रूचि के अनुसार हिस्सा लेते हैं ,जिससे वे जीवन में व्याप्त आनन्द का अनुभव करते हैं तथा उनमें सृजनात्मकता का विकास होता है।सह –शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता के माध्यम से आत्मविश्वास,सहयोग,सहानुभूति,हास्य,हर्ष,उल्लास,प्रेम,प्रसन्नता आदि सकारात्मक भावों का विकास होता है।अपनी रूचि का कार्य करने पर उर्जा और स्फूर्ति का संचार होता है जो उन्हें मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में मदद करता है।संगीत ,नृत्य,नाटक,लेखन,चित्रकारी,रंगोली आदि में भागीदारी से कल्पना शक्ति का विकास होता है।सांस्कृतिक कार्यक्रम भावों को व्यक्त करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। मनुष्य की दमित भावनाएं उन्हें मानसिक रोगी बना सकती है ,यदि सही समय पर उन्हें व्यक्त न किया जाएं । कला मनुष्य की दमित इच्छाओं,आकांक्षाओं को व्यक्त करने का अप्रत्यक्ष माध्यम है।शिक्षा में सह–शैक्षिक गतिविधियां छात्रों को शारीरिक,मानसिक,भावनात्मक रूप से सबल बनाती हैं।

4 विधालयी वातावरण और भावनात्मक बुद्धि–

बालक के व्यक्तित्व के विकास में वशांनुक्रम के साथ –साथ वातावरण की भी अहम भूमिका होती है।परिवार,आस–पडोस के साथ–साथ विधालय का वातावरण भी बालक के विकास को प्रभावित करता है।बालक के व्यक्तित्व का विकास वांछित दिशा की ओर हो रहा है या नही यह वातावरण पर निर्भर करता है।विधालय का शांत,उत्साहवर्धक वातावरण ,सीखने –सिखाने की रूचिपूर्ण तथा प्रभावशाली शिक्षण विधियां,पाठ्य –सहगामी कियाएं बालकों पर अनुकूल प्रभाव डालती हैं इसके विपरीत वातावरण बालकों में क्रोध ,तनाव, ईर्ष्या ,चिडचिडापन पैदा करता है जिससे बालकों में संघर्ष व अपराध प्रवृति को बढावा मिलता है।प्रसिद्ध व्यवहारवादी मनावैज्ञानिक जे बी वाटसन का कहना है कि–

"तुम मुझे एक बालक दो मैं उसे वैसा बनाऊॅगा जैसा तुम चाहते हो"।

माहौल व्यक्ति को बिगाड भी सकता है और सुधार भी सकता है।वर्तमान में कम आयू के बालक अपराधिक प्रवृति में लिप्त पाए जाते हैं जो वातावरण की ही देन है।वातावरण वह चाहे पारिवारिक हो या विधालयी दोनों ही बालक को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।शिक्षा ही वह साधन है जो बालकों को स्वस्थ ,संतुलित,प्रेरणादायी वातावरण प्रदान करके उन्हें संवेगात्मक रूप से सुदृढ नागरिक बना सकती है।

5 शैक्षिक भ्रमण और भावनात्मक बुद्धि–

शिक्षा में शैक्षिक भ्रमण का अपना अलग ही महत्व है। ऐतिहासिक पर्यटन स्थल,संग्रहालय,कार्यशाला,जन्तुशाला,आदि से संबधित जो ज्ञान छात्र कक्षा में सुनकर प्राप्त करते हैं उसे प्रत्यक्ष में देखने ,सुनने,स्पर्श करने का वास्तविक अनुभव उन्हें शैक्षिक भ्रमण के द्वारा ही प्राप्त होता है ।

एक चीनी दार्शनिक ने कहा था–

मैं जो सुनता हूं ,भूल जाता हूं
मैं जो देखता हूं ,वह मुझे याद रहता है,

शैक्षिक यात्राओं के दौरान छात्रों को व्यवहारिक अनुभव तो प्राप्त होता ही है साथ ही साथ विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के सम्पर्क में आने का मौका मिलता है।उनके रहन –सहन ,खान–पान ,वेश–भूषा ,मान्यताएं,विचार आदि की जानकारी मिलती है।इन यात्राओं से बालको में प्रेम,सहानुभूति, सहयोग,आश्चर्य आदि भाव पैदा होते है ।शिक्षक–शिक्षार्थी अन्तःक्रिया को बढावा मिलता है जिससे आपसी सम्बधों में प्रगाढता आती है।एक–दूसरे के भावों की समझ ,स्वयं के भावों पर नियंत्रण तथा प्रबंधन की योग्यता का विकास होता है। छात्र अनुशासन के साथ नए वातावरण में समायोजन करना सीखते हैं।पूर्वाग्रह से मुक्त नये दृष्टिकोण का विकास होता है।

शिक्षा में संवेगों की समझ शिक्षक और शिक्षार्थी दोंनों को ही निम्न प्रकार से लाभान्वित करती है–

1मूल प्रवृतियों के नियंत्रण में उपयोगी–मनुष्य में पायें जाने वाले संवेगों का सम्बध उनकी मूल प्रवृतियों से होता है।मैक्डूगल ने मूल प्रवृतियों की संख्या 16 बताई है।बालकों में विकास की विभिन्न अवस्थाओं के साथ उनमें होने संवेगात्मक परिवर्तन का अध्ययन शिक्षक के लिए अति आवश्यक है ताकि वह बालक में उत्पन्न हाने वाले संवेगों को पहचानकर उन पर नियंत्रण,शोधन तथा उनकों सही दिशा प्रदान कर सकें।

2कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में उपयोगी–विधालय में बालकों में छोटी–छोटी बातो लडाई

–झगडा,मारपीट, अपशब्दों का प्रयोग आम बात है जिससे कक्षा का माहौल दुषित हो जाता हैं।शिक्षक क्रोध, ईर्ष्या,घृणा,आदि संवेगों को पहचानकर उनका सही दिशा में अन्तरण कर सकता है।

3 व्यवहार शोधन में उपयोगी–बालकों की विभिन्न अवस्थाओं में भिन्न–भिन्न प्रकार सकारात्मक संवेगों के साथ–साथ नकारात्मक संवेग भी उत्पन्न होत हैं लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि कौन सा संवेग,किस स्थान पर,कितनी मात्रा में उत्पन्न होना चाहिए।एक शिक्षक ही नकारात्मक संवेगों को पहचानकर,उनका सही दिशा में अन्तरण कर, व्यवहार शोधन कर सकता है।

4 छात्रों में बढती अपराध प्रवृति को रोकने में उपयोगी–वर्तमान में बालकों में बढ रही अपराध प्रवृति का कारण बालकों का अपने संवेगों पर नियंत्रण न होना है।क्रोध,भय,ईर्ष्या आदि संवेगों को देश के नियम तथा कानून से संबधित करके बालकों को अपराध की ओर अग्रसर होने से रोका जा सकता है।वर्तमान में हो रहे अमानवीय कृत्यों तथा हिंसक घटनाओं के मूल में बालकों के विधालयी जीवन में उत्पन्न होने वाले अवांछित संवेग ही होते हैं यदि इन पर सही समय पर और सही मात्रा में नियंत्रण न किया जाये तो दीर्घकाल में यहीं संवेग एक विशाल अपराध रूपी वृक्ष का रूप धारण कर लेते हैं जिनकी जडें धीरे–धीरे न जाने कितनी मासूम जिंदगियों को अपनी गिरफ्त में ले लेती है।

निष्कर्ष–निष्कर्ष में विधालय का वातावरण और शिक्षक बालकों के संवेगों को पूर्ण रूप से प्रभावित करते है।यदि विधालय का वातावरण स्वस्थ व विधार्थियों के अनुकूल है तो उनका संवेगात्मक विकास उचित दिशा में होगा। वे जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में अनुकूलन कर सकेंगें।उनका विकास उचित दिशा में हो सकेगा लेकिन यह तभी संभव हो सकेगा जब शिक्षक स्वयं संवेगात्मक रूप से परिपक्व होंगें और पारस्परिक रूप से एक दूसरे को समझते हो। विधालयों में शैक्षिक क्रियाओं के साथ –साथ सह शैक्षिक क्रियाओं पर भी बल देना चाहिए ताकि विधार्थी अपने भावों का प्रकटीकरण कर सकें। सवेंग बालकों के व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।बालकों का सर्वांगीण विकास संवेगों द्वारा ही प्रभावित होता है। प्रशिक्षण के द्वारा अवांछित संवेगों को समाजोपयोगी बनाया जा सकता है इसलिए शिक्षा ही वह माध्यम है जो बालकों के संवेगात्मक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।अतः बालकों को ज्ञानात्मक शिक्षा देने के साथ–साथ प्रारम्भ से ही संवेगात्मक समझ उत्पन्न करनी चाहिए।संवेगों के नियंत्रण से तात्पर्य संवेगों का दबाना नहीं अपितु सकारात्मक अथवा नकारात्मक संवेगों के प्रति उचित अनुक्रिया करने से है। जितना अधिक ध्यान संज्ञानात्मक कौशलों तथा मानसिक विकास पर दिया जाता है उतना ही भावनात्मक क्षेत्र की योग्यताओं के विकास पर भी दिया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1 दत्ता,संजय (2005) शिक्षा मनोंविज्ञान, चौड़ा रास्ता जयपुर : जैन प्रकाशन।
2 पाठक पी0डी0एवं त्यागी,जी0एस0डी0 2006,शिक्षा के सिद्धांत,आगरा।
3 राजरिया, अरूण कुमार (2007) अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रकिया श्री कविता प्रकाशन
4 सिहं डॉ रामपाल (2008) शिक्षण एव अधिगम का मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मन्दिर
5 पाठक, पी0डी0 (2008) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर
6 शर्मा डॉ प्रभा, पारीक डॉ अमित (2013) शिक्षा मनोविज्ञान चोड़ा रास्ता जयपुर ।
7 पाठक,पी0 डी0 एवं मंगल एस0के0 अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया,अग्रवाल पब्लिकेशन 2013।